वार्तालाप–539, अनंतपुर (आं.प्र.), तारीख–22.03.08
Disc.CD No.539, dated 22.3.08 at Anantpur (Andhra Pradesh)

9.15–19.05
जिज्ञासु– परमपिता परमात्मा शिव ब्रह्मा द्वारा, शंकर द्वारा पार्ट बजाते हैं फिर विष्णु द्वारा भी पार्ट बजाते हैं क्या?
बाबा– त्रिमूर्ति शिव कहा जाता है या दो मूर्ति शिव कहा जाता है या एक मूर्ति शिव कहा जाता है? क्या कहा जाता है? त्रिमूर्ति शिव। एक होता है पार्ट बजाना ब्रह्मा के रूप में। क्या? ब्रह्मा माने मन। मन्सा के संकल्पों से ब्रह्मा ने क्या रची? सृष्टि रची। लेकिन वो किसी को दिखाई तो पड़ती नहीं है। सारी दुनिया को दिखाई पड़ेगी क्या? नहीं। सारी दुनिया को दिखाई नहीं पड़ती। फिर दूसरा पार्ट कौनसा है? शंकर द्वारा विनाश। काहे का विनाश? दुष्ट संस्कारों का विनाश, दुर्गुणों का विनाश, दुष्ट पार्टधारियों का विनाश, पुरानी दुनिया का विनाश और उसके लिए, उसके लिए वाचा चाहिए। क्या? जिनका भी विनाश होना है वो बड़–6 बोलनेवाले हैं या मनीषी हैं? क्या हैं? बोलनेवाले ज्यादा हैं और करनेवाले कम हैं। होना क्या चाहिए? बातें कम, काम ज्यादा। तो बातबड़ बहुत बनाते हैं, बातें बहुत करते हैं और काम कुछ भी नह ीं करना चाहते। तो ऐसे बतबड़ करनेवालों के लिए, विनाश करने के लिए वाचा की जरूरत होती है और उस वाचा में जो ज्ञान भरा हुआ है ''गूंजी विनाश की वाणी फिर भी कितनी कल्याणी'' ये भी साकार की बात हो गई। ब्रह्मा के द्वारा मन्सा संकल्पों से सृष्टि रची गई वो भी साकार की बात हो गई लेकिन विष्णु न साकार में होता है। उसकी मन्सा भी नहीं चलती, उसकी वाचा भी नहीं चलती इतनी। क्या चलता है? अरे कुछ तो चलता है। प्रैक्टिकल कर्मेन्द्रियाँ काम करती हैं या नहीं करती हैं?
जिज्ञासु– करती हैं।
Time: 3.45-13.05
Student: The Supreme Father Supreme Soul Shiv plays a part through Brahma, through Shankar. Then does He play a part through Vishnu as well?
Baba: Is it said *Trimurty Shiv* or two *murty* Shiv or one *murty* Shiv? What do [people] say? *Trimurty Shiv*. One part is played in the form of Brahma. What? Brahma means mind. What did Brahma create through the thoughts of the mind? He created the world. But it is not visible to anyone. Will it be visible to the entire world? No. It is not visible to the entire world. Then which is the second part? Destruction through Shankar. Destruction of what? Destruction of wicked sanskars, destruction of vices, destruction of wicked actors, destruction of the old world; and words are required for that. What? Are all those who are to be destroyed prolific speakers or are they intellectuals (*manishi*)? What are they? They speak more and work less. What should be the ideal situation? Less words and more work. So, they speak more, speak a lot and do not want to do anything. So, words are required for the destruction of such prolific speakers. And the knowledge that is contained in those words [for which it is said] – '*goonji vinash ki vaani fir bhi kitni kalyani'* (the sound of destruction is reverberating; yet it is so beneficial). This is also about the corporeal one. The world was created through the thoughts of Brahma; that is about the corporeal one too, but Vishnu is not in corporeal form. His mind does not work either; neither does he speak much. What does he do? Arey, he must be doing something. Do his bodily organs work in practical or not?
Student: They do.

बाबा– तो एक हो सिर्फ मन्सा चलानेवाला हठयोगियों का सरदार और एक हो मन्सा अथवा वाचा चलानेवाला। वाचा बहुत चलाए, मन में संकल्प–विकल्प बहुत करे लेकिन प्रैक्टिकल में कुछ भी न करे और एक हो मन्सा में ज्यादा घुम्माड़े संकल्प–विकल्प चले या ना चले, वाचा बहुत चले या ना चले लेकिन कर के दिखा दें। तो उसे ऊँचे ते ऊँच पार्टधारी कहेंगे या नीच ते नीच पार्टधारी कहेंगे?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– ऊँच ते ऊँच पार्टधारी।
Baba: If one is the chief of *hathyogis* who uses only his mind and if the other one uses mind or his words. He speaks a lot, creates a lot of positive or negative thoughts, but does not do anything in practical and the other one may or may not create many positive or negative thoughts, he may or may not speak much but he does in practical, then will he be called the highest actor or the lowest actor?
Student: The highest actor.

बाबा– जैसे कहते हैं, शास्त्रों में भी लिखा है, तीन प्रकार के पुरूष (बादल)होते हैं। एक होते हैं गरजते बहुत हैं और बरसते बिल्कुल नहीं। वो थर्ड क्लास हुए या फर्स्ट क्लास हुए? वो तो थर्ड क्लास हो गये। इतनी गरजना की, इतना सबको ड़राया–धमकाया और किया कुछ भी नहीं। पानी–आनी बरसा ही नहीं; सूखा का सूखा ही पड़ा रहा। तो लोग खुश होंगे या दुखी हो जायेंगे? और ही दुखी हो जायेंगे। इतना दिखावा किया। एक होते हैं गरजते भी हैं, बहुत गरजते हैं और कुछ न कुछ बरसते भी हैं। गरजते भी हैं, बरसते भी हैं लेकिन बरसते हैं पहाड़ों पर। क्या? ऊसर–बंजर जमीन है वहाँ बरस जाते हैं। तो बरसे भी पथरीली जमीन पर बरसे, ऊसर–बंजर में बरसे, पहाड़ों पर बरसे फायदा, फायदा कुछ भी नहीं हुआ। हुआ फायदा? ये रूद्रमाला के मणके इतनी ज्ञान की बरसात होती है, इनकी बुद्धिरूपी धरणी में कुछ परिवर्तन हुआ? इनकी बुद्धिरूपी धरणी क्या कहें? ऊसर–बंजर कहे या कुछ पैदाइश हुई नई दुनिया की? नई दुनिया की पैदाइश हुई भले हो लेकिन दुनिया को फिर भी कुछ भी दिखाई, दिखाई नहीं पड़ता। और विष्णु द्वारा क्या काम होता है? तीसरे बादल वो होते हैं जो गरजते भी नहीं हैं। क्या? गरजते नहीं हैं लेकिन बहुत बरसते हैं। आये और जहाँ जरूरत है वहाँ बरसे और गये। तो कौनसे अच्छे हुए? जो प्रैक्टिकल काम करके दिखाए, वो ज्यादा अच्छे हुए या जो गरजना करे और सोच–विचार ही करते रहे वो ज्यादा अच्छे हुए? प्रैक्टिकल करनेवाले अच्छे हुए।
Baba: For example, it is written in the scriptures that there are three kinds of people (clouds). One kind is those who thunder a lot, but do not rain at all. Are they third class or first class? They are third class. They thundered so much, they frightened and threatened others so much and did not do anything. They did not rain and there was drought. Then, will people be happy or will they be sorrowful? They will become even more sorrowful. They showed off so much. One kind is those who thunder a lot and also rain to some extent. They thunder as well as rain, but they rain on the mountains. What? They rain on the non-arable(barren) land. So, they rained, but they rained on the stony land, they rained on non-arable land; they rained on the mountains; there was no benefit at all. Was there any benefit? So much rainfall of knowledge takes place on the land-like intellect of the beads of Rudramala, but did any transformation take place? What should their land-like intellect be termed? Should it be called non-arable or did any cultivation of new world take place? Cultivation of new world may have taken place, but nothing is visible to the world. And what work takes place through Vishnu? Third kind of clouds is those which do not thunder at all. What? They do not thunder, but rain a lot. They come and rain wherever there is requirement and depart. So, who are better? Are those who perform the task in practical better or are those who thunder and just keep thinking, better? Those who do in practical are better.

तो भगवान भी तीन प्रकार की मूर्तियाँ निर्माण करता है। एक है ब्रह्मा– मन के संकल्पों से सृष्टि रची। दूसरा है ''गूंजी विनाश की वाणी....। सारे मंठ–पंथ जितने भी दुनिया में फैले हुए हैं, जितने भी धर्म के नाम पर धतिंग फैले हुए हैं उन सबको वाणी से काट के खंड़न कर देता है। सब विकारी हैं; एक भी निर्विकारी नहीं। सब विकारी, पतित, तमोप्रधान दुनिया बनानेवाले हैं। लेकिन फायदा हुआ इससे? कुछ सृष्टि में नयापन दिखाई पड़ता है? खंड़न तो सबका हो गया लेकिन मंड़न, मंड़न दिखाई नहीं पड़ता। अगर है भी तो मन्सा के अंदर छुपा

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

हुआ है। जो मनीषी हैं वो मुठ्ठ भर थोड़ी सी आत्मायें हैं। मन्सा में तीव्रगतिवाली; परंतु उनकी आवाज दुनिया में नहीं फैलती क्योंकि वो प्रैक्टिकल में फेल हैं। इसलिए कोई उनकी बात मानता नहीं। तो ये दो वर्ग तो फेल हो गये। अब तीसरा कौन बचा? कौनसा ग्रुप बचा? विष्णु। तो विष्णु का ही वो ग्रुप है जिसमें परमात्मा बाप प्रैक्टिकल आकर के काम करते हैं। प्रैक्टिकल कर्मों से भी शिक्षा दी जा सकती है या नहीं दी जा सकती है? कोई बोले नहीं। क्या? मन में मनन–चिंतन–मंथन भी नहीं कर पाये, ना करे लेकिन काम सारा अच्छा कर के दिखा दे। तो मान्यता होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? होनी चाहिए। इसलिए विष्णु जो पार्टधारी है वो प्रैक्टिकल कर्म कर के दिखानेवाला पार्टधारी है और वो आत्मा 63 जन्मों में वो नहीं कर पाती। क्या? क्या काम? 63 जन्मों में वो पवित्रता की नई दुनिया स्थापन करने का काम यूनिटी नहीं बना पाती लेकिन इस अंतिम जन्म में जब परमात्मा बाप इस सृष्टि पर प्रैक्टिकल साकार तन में मुकरर्र रूप से आता है तो उसकी वाचा को मानकर के, श्रीमत को सर माथेपर धारण करके वो कार्य प्रैक्टिकल में सम्पन्न कर के दिखा देती है। तो ये भगवान कराता है या वो आत्मा खुद करती है?

So, even God creates three kinds of *murtis* (personalities). One is Brahma, he created the world through the thoughts of the mind. Second is, 'the sound of destruction reverberated…' He (i.e. Shankar) destroys through his words all the sects and sub-sects that are spread out in the world, the ostentations that have spread in the name of religion. All are vicious; not even a single one is vice less. All of them create vicious, sinful, degraded world. But did this bring any benefit? Is there any newness visible in the world? Everyone was condemned, but the transformation is not visible. Even if it is there, it is hidden in the mind. Very few souls, a handful of them are thinkers. Their mind is fast, but their sound does not spread in the world because they are failures in practical (acts). This is why nobody accepts their versions. So, these two categories have failed indeed. Now who is the third one? Which group remains? Vishnu. So, Vishnu's group is the one in which the Supreme Soul Father comes and works practically. Can teachings be given through practical actions or not? Someone may not speak. What? Someone may not be able to think or churn either or he does not do it, but he does all the deeds well. So, should he be recognized or not? He should be. This is why the actor Vishnu is the one who performs action in practice and that soul is unable to do that deed in 63 births. What? Which task? She was unable to perform the task of establishing the new world of purity in 63 births, she was unable to establish unity, but in this last birth when the Supreme Soul Father comes in this world in a practical body in a corporeal form in a permanent way, then she accepts His words, accepts the shrimat and accomplishes the task in practice. So, does God make her do that or does that soul do it on its own?

14.00–15.30

जिज्ञासु– शंकर जी को ताज नहीं दिखाते?

बाबा– शंकर जी को ताज नहीं दिखाते। इसलिए नहीं दिखाते कि जैसे नेहरूजी को दुनिया मानती थी बेताज बादशाह। क्या? कैसा बादशाह था? बेताज बादशाह। ऐसी स्नेह करने वाली रूह थी कि पीछे से भल कोई कितना भी विरोध करे लेकिन जब वो सामने आते थे तो हर आत्मा उनके अनुकूल हो जाती थी। उनके अंड़र में चलने के लिए खुशी–2 राजी हो जाती थी तो बेताज बादशाह हुआ ना। तो बेताज बादशाह होना अच्छा या ताज दिखावा करने के लिए बना रहे और दिलों पर किसी के राज्य न कर पाये वो ज्यादा अच्छा? बेताज बादशाह। इसलिए उनको ताज नहीं दिखाया जाता। ये भगवान का पार्ट है जो सबके दिलों को जीत लेता है। इसलिए एक ही देवता है जिसके साथ भगवान शिव का नाम जोड़ा जाता है। और कोई भी देवता ऐसा नहीं है जिसके साथ शिव का नाम जोड़ा जाता हो।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 14.00-15.30
Student: Shankarji is not shown to be wearing a crown.
Baba: Shankarji is not shown to be wearing a crown because just as the world used to consider Nehruji as an uncrowned king. What? What kind of an emperor was he? Uncrowned king (*betaaj baadshaah*). This soul (*rooh*) used to shower such affection (*neh*) that someone may oppose him to any extent on his back, but when he used to come in front of them, every soul used to be in his favour. Every soul used to become ready to work under him happily. So, he was an uncrowned king, wasn't he? So, is it better to be an uncrowned king or is it better if there is a crown to show-off but he is unable to rule over anyone's heart? (It is better to be an) Uncrowned king. This is why he is not shown to be wearing a crown. It is God's part that He wins everyone's heart. This is why there is only one deity with whose name the name of Shiv is prefixed. There is no other deity with whose name the name of Shiv is prefixed.

16.45–22.20
जिज्ञासु– बाबा दिल्ली में सबसे पहले कौनसा राजा थे और राज्य किया? बाबा दिल्ली में सबसे लास्ट राजा कौन थे?
बाबा– अरे!
जिज्ञासु– हिन्दू या मुसलमान? पहले कौन थे और लास्ट में कौन बनेगा?
बाबा– जो लास्ट होगा वो विनाशकारी होगा या जो फर्स्ट होगा वो विनाशकारी होगा? लास्ट वाला विनाशकारी होगा, राजाई को ही खलास करनेवाला होगा और जो फर्स्ट होगा वो राजाई स्थापन करनेवाला होगा। तो अभी तक इतना ज्ञान में चले बेसिक में, एड़वान्स में अभी तक ये प्रश्न पूछने की दरकार है कि दुनिया का पहला राजा कौन हुआ? कौन हुआ? नर से नारायण हुआ पहला राजा। वो तो सूर्यवंश की बात हो गई। हुई ना? अब आ जायें दूसरे वंशियों में। तो जितने भी दूसरे वंशवाले राजोंएँ हैं उनमें सबसे पावरफुल वंश कौनसा है? सूर्यवंशी–चंद्रवंशी तो फिर भी स्थापनाकारी है कि विनाशकारी है? स्थापना करनेवाले हैं। बाकी जितने भी धर्म हैं वो सब, सब विनाश करनेवाले हैं। उन विनाश करनेवालों में सबसे जास्ती विनाशकारी प्रवृत्तिवाला कौन है? मुसलमान, इस्लाम धर्म। पहले नाम था इस्लाम धर्म बाद में मुहम्मद आने के बाद मुस्लिम बन गये। और उन मुसलमानों के धर्म में भारतवर्ष में जो राज्य स्थापन हुआ वो मुगल राज्य कहलाया। क्या? कैसे राज्य करनेवाले थे? जिनका हिन्दू धर्म की ग्लानि करते–2 मुँह गल गया। तो नाम क्या पड़ गया? मुँह गले। ये मुँहगलिया सलतनत का पहला राजा भी, पहली स्थापना करनेवाला भी बाबर ही था। उनका उत्थान, उनके धर्म का, उनके राज्य की स्थापना करनेवाला भी कौन था? वही साकार व्यक्तित्व था, मुकर्रर रथ था जिसमें परमपिता परमात्मा शिव ने प्रवेश किया था और आखिर में जाकर के मुँहगलिया सलतनत को नष्ट करनेवाला कौन हुआ?
जिज्ञासु– शिवाजी।
Time: 16.45-22.20
Student: Baba, who were the first king who ruled over Delhi? Baba, who was the last ruler of Delhi?
Baba: Arey!
Student: Hindu or Muslim? Who was the first and who will be the last (ruler)?
Baba: Will the last one be destructive or will the first one be destructive? The last one will be destructive. He will end the very kingship and the first one will establish kingship. So, till now you have been following the basic knowledge and the advance knowledge; is there still any need to ask who is the first king of the world? Who was it? The one who changes from a man to Narayan is the first king. That is about the Sun Dynasty. Is it not? Now come to the other dynasties. So, which is the most powerful dynasty among the other dynasties? The *Suryavanshis* and the *Chandravanshis* are creative anyway or are they destructive? They are creative. All other religions are destructive. Among those destructive ones who has the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

maximum tendency for destruction? The Muslims; the Islam religion. Initially its name was Islam; later on after the arrival of Mohammad they became Muslims. And in that Muslim religion, the kingdom that was established in India was named Mughal kingdom. What? How did they rule? They were the ones whose mouth (*muh*) melted (*gal gaya*) while continuously defaming Hinduism. So, what name did they get? *Muh galey* (Mughal). Babar himself was the first ruler, the founder of the Mughal Sultanate. Who was the one who caused its rise, who established their religion, their kingdom? He was the same corporeal personality, the permanent chariot, in whom the Supreme Father Supreme Soul had entered and ultimately who destroyed the Mughal sultanate in the end?
Student: Shivaji.

बाबा– नहीं। मुगल सलतनत में?
जिज्ञासु– औरंगजेब।
बाबा– नहीं। वो मध्य में था। मध्य के बाद। मुगल सलतनत का अंतिम बादशाह?
जिज्ञासु– नादिरशाह।
बाबा– नादिरशाह ने तो मारकाट मचाई थी मुगलियों के बीच में। रंगीला। जो राग–रंग में ही मस्त रहता था, प्रजा की बिल्कुल देखभाल नहीं करता था। उस समय पूरा पतन हो गया। और,
जिज्ञासु– बाबा हिन्दुओं का राजा कौन था दिल्ली का अंतिम राजा?
बाबा– वो तो राजाई ही खत्म हो गई फिर राजाएँ कहाँ रह गये। सबसे अंतिम राजाई चलती है नेपाल में, अंत तक। कहाँ चलती है? नेपाल। वो तो हद का नेपाल है; बेहद का नेपाल कौनसा है? जो नई दुनिया की पालना करनेवाले हैं पहले–2, वो कौनसे वंश के हैं? सूर्यवंशी। जो पहले–2 नई दुनिया का फाउन्ड़ेशन ड़ालते हैं। जो बापदादा ने बोला है तुम बच्चों को नई दुनिया की सौगात दी है। वो फाउन्ड़ेशन अंड़रग्राउन्ड में पड़ता है। दुनियावालों को दिखाई नहीं पड़ता। वो अंड़रग्राउन्ड फाउन्ड़ेशन डालनेवाले पहले–2 वो बादशाह हैं। जो आदि सो, सो अंत में वो नेपाल का राज्य और नेपाल का राजा दुनिया में अंत तक राज्य करता है। उनकी राजाई अंत तक चलती है। एक नेपाल देश ही ऐसा है जो दुनिया के सबसे ऊँची स्टेज में राज्य करता है। हद का भी और बेहद का भी। औरों की तो राजाई ही नहीं हुई। जो आदि राजा सो अंत राजा। औरों ने तो मटियामेट कर दिया भगवान की दी हुई राजाई का। जो औरों के फॉलोअर्स हैं वो कहते हैं हमें नहीं चाहिए राजाई। क्या? हमें ऐसी राजाई नहीं चाहिए। धरो अपनी जेब में। तिरस्कार कर देते हैं भगवान की दी हुई देन का। हम दास–दासी ही बढ़िया।
Baba: No. In the Mughal Sultanate?
Student: Aurangzeb.
Baba: No. He was in the middle. After the middle (period). Who was the last emperor of the Mughal Sultanate?
Student: Nadirshah.
Baba: Nadirshah caused bloodshed among Mughals. Rangeela. The one who used to always be immersed in music and merriment (*raag-rang*). He did not care for the subjects at all. At that time it underwent complete downfall. What else?
Student: Baba, who was the last Hindu ruler of Delhi?
Baba: When the kingship itself ended, how can there be kings? The last kingship continues in Nepal till the end. Where does it exist? Nepal. That is Nepal in a limited sense. Which is the Nepal in an unlimited sense? To which dynasty do those who first of all sustain the new world belong? The *Suryavanshis,* who first of all lay the foundation of the new world for which Bapdada has said,: You children have been given the gift of new world. That foundation is laid underground. It is not visible to the people of the world. They are the first kings to lay the underground foundation. Whatever happens in the beginning happens in the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

end. That kingdom of Nepal and the king of Nepal rules in the world till the end. Their kingdom continues till the end. It is Nepal alone which rules in the highest stage of the world, in a limited as well as unlimited sense. Others did not have kingship at all. The first ruler is the last ruler. Others destroyed the kingship given by God. The followers of others say that they do not require kingship. What? [They say:] 'We do not want such kingship. Keep it in your pocket.' They ignore the gift of God. They think it is better to be servants and maids.

22.25 –27.10
जिज्ञासु– बाबा अंकल और आंटी कौन हैं?
बाबा– अंकल? अरे, ताऊ कौन है? बेहद की दुनिया में ताऊ कौन है?
जिज्ञासु–
बाबा– फिर। तो ताऊ का छोटा भाई भी होगा। कौन है? अरे, विष्णु कौन है? अरे, अंकल है, चाचा है। हाँ, और आगे?
जिज्ञासु– आंटी?
बाबा– उनकी युगल। वो कोई एक थोड़े ही है। विष्णु एक है या दो हैं? दो हैं।
Time: 22.25-27.10
Student: Baba, who is uncle and aunty [as said in the Avyakt Vani now]?
Baba: Uncle? Arey who is *Tau* (father's elder brother)? Who is *Tau* in the unlimited world?
Student: *Tausi takht* (throne).
Baba: Then. Then there will be a younger brother of *Tau* as well. Who is it? Arey, who is Vishnu? Arey, there is an uncle, there is a *chacha* (father's younger brother). Yes, proceed further.
Student: Aunty?
Baba: His wife. It is not just one (person). Is Vishnu one or two? Two.

जिज्ञासु– बाबा अष्टदेव के अलावा बाकी सब धर्मराज की सजा खाते हैं ये तो आपने निश्चय किया है माना फिक्स किया है।
बाबा– क्या? किसने निश्चय किया है?
जिज्ञासु– सजा को बचाने से क्या फायदा?
बाबा– एक बार और पढ़ो। जोर से सुनाओ सबको। पूछनेवाला क्या पूछ रहा है? कोई बच्चा बुद्धि है या सालिम बुद्धि है?
Student: Baba, everyone except the eight deities suffer the punishments of Dharmaraj. So, you have decided, i.e. fixed.
Baba: What? Who has decided?
Student: Then what is the use of avoiding punishments?
Baba: Read once again. Read out loudly to everyone. What is the seeker asking? Does he have a child-like intellect or a mature intellect?

जिज्ञासु– अष्टदेव के अलावा बाकी सब धर्मराज की सजा खाते....
बाबा– अष्टदेव के अलावा बाकी सब धर्मराज की सजा खानेवाले हैं। और आगे।
जिज्ञासु– तो आपने निश्चय किया है.....
बाबा– तो आपने?
जिज्ञासु– हाँ,
बाबा– तो आपने? आपने माना किसने?
जिज्ञासु– बाबा।
बाबा– बाबा ने। बाबा को भी निश्चय–अनिश्चय करने की दरकार है? अरे, बाबा की जो वाणी है वो सदैव निश्चय ही वाली है या कभी अनिश्चय भी पैदा हो सकता है उसमें? बाबा तो जो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

कुछ बोलते हैं वो पत्थर की लकीर है। क्या? आठ सजा नहीं खावेंगे और बाकी सब...। तो आपने क्यों? ये तो बात ही गलत हो गई। हाँ, तो आपने....।
जिज्ञासु– आपने निश्चय किया है...
बाबा– आपने निश्चय किया है।
जिज्ञासु– माना फिक्स किया है।
बाबा– आपने फिक्स किया है।
जिज्ञासु– फिर सजा को बचाने से क्या फायदा?
Student: Everyone except the eight deities suffer the punishments of Dharmaraj….
Baba: Everyone except the eight deities suffer the punishments of Dharmaraj. Proceed further.
Student: So, you have decided….
Baba: So, **you**?
Student: Yes.
Baba: So **you**? Who are you talking about when you say '**you**'?
Student: Baba.
Baba: Baba. Does Baba need to pass through faith and faithlessness? Arey, is Baba's vani always a confident one or is it doubtful at anytime? Whatever Baba speaks is like a line drawn on a stone. What? 'Eight will not suffer punishments and everyone else…' So, why **you**? This is wrong in itself. Yes, so **you**….
Student: You have decided….
Baba: You have decided.
Student: I mean **you** have fixed.
Baba: You have fixed.
Student: Then what is the use of avoiding the punishments?

बाबा– जब आपने निश्चय ही कर दिया कि आठ सजा नहीं खावेंगे। तो बाकी तो सब सजा खावेंगे ना। फिर इसमें ज्यादा मनन–चिंतन–मंथन करने की और पुरूषार्थ करने की दरकार ही क्या? हमें तो सजा खाना ही है। लेकिन सजा खाने में भी अंतर होगा या एक जैसी सब सजा खायेंगे? कोई तो सिर्फ धर्मराज की लाल–2 आँखों की ही सजा खा लेंगे। इससे ज्यादा सजा....। किसी को डांट–डपट होती है, किसी को डांट दिया जाता है, कोई को आँखों–2 से ही दंड दे दिया जाता है बस, इतना दंड ही उनके लिए बहुत काफी है। कोई ऐसे होते हैं कि थोड़ी सजा से उनका परिवर्तन नहीं होता है फिर धर्मराज के सड़ौके हड्डी–2 तोड़ दूंगा, खाल उधेड़ दूंगा ऐसे–2 बोलते हैं। तो सजाओं में भी फर्क है ना। कोई कम सजा खावेंगे, कोई ज्यादा सजा खावेंगे। जो कम सजा खावेंगे वो ऊँच पद कम गंवावेंगे और ज्यादा सजा खावेंगे तो पद पूरा ही गंवाय देंगे।
Baba: When you have already fixed that eight will not suffer punishments then the rest will suffer punishments, will they not? Then where is the need for us to think and churn more or to make more spiritual efforts? We have to suffer punishments anyway. But will there be a difference in punishments or will everyone suffer punishments equally? Some will suffer just the punishment of red eyes of Dharmaraj. [They will not have] punishment more than that. Someone is scolded, whereas some are given punishments, some are given punishments through the eyes only, that is all. That punishment is enough for them. There are some who are not transformed through little punishments. Then the stick of Dharmaraj… He says I will break every bone; I will skin you. So, there is a variation in punishments. Some will suffer less punishments some will suffer more punishments. Those who suffer less punishment will lose their post to a lesser extent and those who suffer more punishments will lose their post entirely.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जैसे त्रेता के अंत की तीन गद्दियाँ है। तीन गद्दियों पर बैठनेवाले जो हैं वो ऐसा पार्ट बजाते हैं, कहते हैं – अष्टदेवों की लिस्ट में हमें भले नहीं आना है। जब नहीं आना है तो अच्छा विरोध ही करें, क्यों न सबको अनिश्चय बुद्धि बनाके तोड–ताड, तोड़–फाड़ के खत्म कर दें ब्राह्मणों की दुनिया। तो अंत तक ऐसा पार्ट बजाते हैं। तो ज्यादा सजा के भागीदार हुए या कम सजा के भागीदार हुए? ज्यादा सजा के भागीदार बन गये। राजाएँ तो बनेंगे लेकिन जो स्वर्ग की अंतिम खंडित गद्दी है, जो स्वर्ग का राज्य ही खत्म करनेवाली है उसके थोड़े समय के लिए राजा बन जायेंगे। बाकी 63 जन्मों भी ऐसे ही सजा खाते रहेंगे। भगवान बाप जो यहाँ बोलते हैं उस बात पर निश्चय करना चाहिए और निश्चय कर के उमंग–उल्लास में आगे बढ़ना चाहिए या ठंढा पुरूषार्थ कर के हाथ पे हाथ धर के बैठ जाना चाहिए? अरे, भगवान की वाणी है। भगवान की वाणी पर निश्चय नहीं करेंगे तो क्या व्यक्ति है कोई यहाँ बोलनेवाला?

For example, the three thrones in the end of the Silver Age. Those who sit on those three thrones play such a part[that] they say: We are not to be included in the list of eight deities anyway. When we are not to be included (in that list), so it is better if we oppose. Why not make everyone have a doubtful intellect and break and destroy the world of Brahmins. So, they play such a part till the end. So, will they be entitled to more punishments or less punishments? They are entitled to more punishments. They will definitely become kings, but they will become kings for a short period who sit on the last impaired throne of heaven, which is going to end the rule of heaven. They will go on suffering punishments in the remaining 63 births too. Should we have faith on whatever God the Father speaks here and after developing faith should we proceed ahead with zeal and enthusiasm or should we make cold spiritual efforts and sit silently? Arey, these are God's versions. If you do not develop faith on the versions of God, then is it any person speaking here?

29.50–30.20

जिज्ञासु– बाबा, झांसी की रानी का पार्ट क्या बाबा ही बजाते हैं?

बाबा– बाबा किसी का पार्ट नहीं बताते। जो आत्मा जैसा पार्ट बजानेवाली है अपनी वाचा से, अपने कर्मों से, अपनी दृष्टि से, वृत्ति से, अपनी चलन से स्वतः ही अपने पार्ट को खोलेगी। बापदादा किसी का पार्ट बोर्ड पर लिखकर या कागज पर लिखकर नहीं बताते। अभी भी नहीं बतायेंगे।

Time: 29.50-30.20

Student: Baba, does Baba himself play the role of the Queen of Jhansi?

Baba: Baba does not reveal anyone's part. A soul reveals its part through its own words, through its actions, through its vision, through its vibrations, through its behavior automatically. Bapdada does not tell you about anybody's part by writing on a board or by writing on a paper. Even now He will not tell you.

30.22–30.50

जिज्ञासु– बाबा, अभी तक कितना कल्पांत हो गया?

बाबा– माना गिनती करें एक कल्प हो गया, दो कल्प हो गया, चार कल्प हो गया। माना जो पहला कल्प हो गया उससे पहले कोई कल्प नहीं हुआ था। ऐसे? माने ये सृष्टि की आवृति कितने बार हो चुकी? ये सृष्टि अनादि है या गिनती में गिनी जा सकती है?

जिज्ञासु– अनादि।

बाबा– तो अनादि फिर ये प्रश्न क्यों करते हैं? ये हमेशा चलती रही है। ऐसे ही चलती रहेगी।

Time: 30.22-30.50

Student: Baba, how many *kalpas* (world cycles) have passed so far?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Do you mean we should calculate that one *kalpa* is over, two *kalpas* are over, four *kalpas* are over. Do you mean to say that there was no *kalpa* prior to the first *kalpa*? Do you mean to ask how many times this cycle has repeated? Is this world (cycle) eternal or can it be counted?
Student: Eternal.
Baba: So, it is eternal, then why do you raise this question? It has always been in existence and will continue to be like this.

35.55–40.55
जिज्ञासु– बाबा अंतिम समय में एक–2 में 16–16, 10–10 आत्माएँ प्रवेश करते हैं ना।
बाबा– हाँ जी।
जिज्ञासु– वो कैसे याद करेंगे बाबा?
बाबा– जिनके कर्मबंधन होंगे उन्हीं में ही प्रवेश करेगी या सब में प्रवेश करेंगी? जिन्होंने ऐसी गंद करनेवाली, ऐसे पापकर्म करनेवाली आत्माओं के साथ पूर्वजन्म में, 63 जन्मों में संबंध जोडे होंगे और भगवान को छोड़ा होगा और शैतानों से लगन लगाई होगी। जो भगवान के ज्ञान को बिल्कुल पसंद नहीं करते तो वही हिसाब–किताब जोड़ेंगे कि नहीं प्रवेश कर के कि दूसरे जोडेंगे? वही आत्मायें जो प्रवेश कर के अपना हिसाब–किताब लेंगी। तो कोई गलत तो नहीं हो रहा है। वो हिसाब–किताब जोडेगी तो पुरूषार्थ को आगे नहीं बढ़ने देगी।
Time: 35.55-40.55
Student: Baba, in the end upto 16 or upto 10 souls each will enter in everyone, will they not?
Baba: Yes, yes.
Student: How will they remember Baba?
Baba: Will they enter only in those with whom they have karmic account or will they enter in everyone? those who might have established relationships with the souls which indulge in such dirty acts, which commit such sins in the past birth, in the 63 births and must have left the company of God and must have been devoted themselvs to devils, who do not like God's knowledge at all will they develop karmic accounts by entering in them or will others develop? Only such souls will clear their karmic accounts by entering them. So, nothing is going wrong in this. When they establish karmic account, they will not allow their spiritual efforts to progress.

जिज्ञासु– और याद करने के लिए बहुत मुश्किल होता है ना बाबा।
बाबा– मुश्किल होता तो है लेकिन उसका तरीका यही है कि एक से प्यार करो और सबसे, इन भूत–प्रेतों से पीछा छुडाओ। एकलव्य में क्यों नहीं कोई दूसरा प्रवेश कर जाये। सभी आत्माओं में प्रवेश करते हैं क्या? नहीं। 33 करोड़ आत्मायें है, 33 करोड़ में से थोडी सी आत्मायें बहुत थोडी सी मुठ भर, मुठ भर में भी पाँचवाँ हिस्सा कहो। पाँच पाण्ड़वों में से श्रेष्ठ थोड़ी सी आत्मायें उनमें सिवाए परमपिता परमात्मा शिव और बापदादा के कोई प्रवेश नहीं कर सकता। सूर्यवंशियों के अलावा और कोई आत्मा प्रवेश नहीं करेगी और दूसरों में प्रवेश करेंगी। तो हिसाब–किताब किसने जोडा? अरे, मुकर्रर रथ में एक शिव ही प्रवेश करता है। और कोई भी आत्मा प्रवेश नहीं कर सकती और शिव के साथ ब्रह्मा की सोल भी प्रवेश करती है। तो प्रवेश करनेवाली आत्मा के ऊपर आखरीन शंकर विजय पा लेता है और उसको कन्ट्रोल कर के अपने अंडर में चलाता है। ये दो आत्माओं के अलावा और कोई उसमें प्रवेश नहीं कर सकता। ऐसे ही नम्बरवार और–2 आत्मायें हैं। 33 करोड देवतायें हैं। एवरेज 33 करोड से 700 करोड को ड़िवाइड करो। कितना नम्बर आयेगा? अरे, 700 करोड जो भी मनुष्य आत्माएँ है उनका 33 करोड़ में प्रवेशता होती है। 700 करोड आत्माएँ सब प्रवेश करनेवाली हैं। 700, पौने 700 करोड।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– लगभग 20 आता है।
बाबा– 20–21 आता है ना।
जिज्ञासु– 21
Student: And Baba we face difficulties in remembering (Baba), don't we?
Baba: You do face difficulties, but the method (for easy remembrance) is - love (only) one and get rid of these ghosts and devils. Why can't a second one enter in Eklavya? Do [souls] enter in all the souls? No. There are 33 crore (330 million) souls. [There are] few souls, very few among the 330 million souls; a handful of them or you can say one fifth of those handful souls ; very few elevated souls among the five Pandavas [that] except the Supreme Father Supreme Soul Shiv and Bapdada nobody can enter them. Except for *Suryavanshis* no other soul will enter them but they will enter in other souls. So, who developed that karmic account? Arey, only one Shiv enters in the permanent chariot. No other soul can enter it. And Brahma's soul also enters along with Shiv. So, ultimately Shankar gains victory over the soul (of Brahma) that enters him and takes it under his control and makes it to work under him. Except these two souls nobody can enter him. Similarly there are other souls according to their stage (*numbervar*). There are 33 crore deities. Divide 700 crores with 33 crores on an average. Which number will you get? Arey, there are 700 crore human souls, they enter in the 33 crores. All the 700 crores will enter s. 700 or 645 crores.
Student: It is approximately 20.
Baba: It comes to 20-21, doesn't it?
Student: 21.

बाबा– हाँ, तो एक–2 में इक्कीस एवरेज बता रहे हैं। कम ज्यादा भी हो सकता है। इक्कीस–2 आत्माएँ भी प्रवेश कर सकती हैं। और, क्यों प्रवेश करती हैं? उसका हिसाब ये है। जैसे कोई कन्या है। पारवारिक जीवन में, आज की दुनिया में कन्याओं को खुला छोड दिया जाता है। उनकी सुरक्षा माँ–बाप उतनी ध्यान से नहीं करते हैं। वो कन्या कोई न कोई के सम्पर्क में आ गई, संबंध में आ गई बाद में उसकी दूसरी जगह शादी हो गई। जिसके संबंध–सम्पर्क में आई है क्लोज़–कॉनटेक्ट में, वो कहीं उसको मिल जाता है अकेले में, तो उसको दबोचने की कोशिश करेगा कि नहीं? अरे, बताओ भाई। करेगा। जितने पुरूष होते हैं सब दुर्योधन– दुशासन होते हैं। वो न्याय–अन्याय नहीं देखती हैं वो आत्मायें। ऐसे ही यहाँ भी बेहद में समझ लो। कहेंगे ऐ कहाँ जा रहे हो? आओ, हमारा तो हिसाब–किताब करो पहले। इधर आओ।
Baba: Yes, so, on an average 21 souls may enter in each one. It could be less or more. Upto 21 souls may enter. And why do they enter? Its calculation is like this. For example, there is a virgin (kanya). In a family life, in today's world virgins are left free. Parents do not care much about their safety. That virgin comes in contact with someone or has a relationship with him. Later on she was married to someone else. Suppose she happens to meet in solitude the person in whose close relationship and contact she has been [before], so, will he try to overpower her or not? Arey, tell me! He will. All the men are Duryodhans and Dushasans. Those souls do not think of justice or injustice. Understand that similar is the case in an unlimited sense here. And they will say, hey! Where are you going? Come, first settle our account. Come here.

42.35–45.00
जिज्ञासु– शिव पार्वती के कल्याण के समय में जो बारात दिखाते हैं जो भक्तिमार्ग में उसको देखकर जो एक मैनावती माता है.....
बाबा– मैना माता माना उनकी सास। शंकरजी की सास का नाम शास्त्रों में रखा गया मैना।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– तो उसको ऐसे दिखाई पड़ता है कि सब भूतप्रेत पीछे हैं और शंकर का भी पाँच सिर हैं और उसके मुख से आग निकल रहा है, ऐसा–ऐसा दिखाई पड़ता है। इसका रहस्य क्या है?

Time: 42.35-45.00

Student: On seeing the marriage party that is shown at the time of marriage of Shiv and Parvati in the path of *bhakti* a mother named Mynavati....

Baba: Mother Myna means his mother-in-law. Shankarji's mother-in-law was named Myna in the scriptures.

Student: So, it appears to her as if those behind him (i.e. Shankar) are all ghosts and devils and Shankar also has five heads and fire is coming out of his mouth. She sees like this. What is its secret?

बाबा– इसका रहस्य यह है शास्त्रों में जितने भी नाम हैं वो काम के आधारपर रखे गये हैं ना। जैसा जिसने काम किया वैसा उसका नाम रखा गया। उसका नाम क्या था माता का? मैना। उनकी सास जो थी शंकर जी की; उनकी सास का नाम उसके काम के आधारपर रखा गया मैना। माना भगवान मुरली में जो भी ऑर्डर करे वो एक ही जवाब करती – मैं ना करूँगी। क्या? चाहे अच्छे तरीके से समझाय के कहें और चाहे सीधे–2 बोले लेकिन उसका जवाब एक ही होता था– मैं ना करूँगी। तो ऐसे जो हर बात में, भगवान के कार्य में, भगवान के डायरेक्शन में ना कर दे तो बड़े ते बड़ी राक्षसी होगी या देवी बनेगी? बड़े ते बड़ी राक्षसी हो गई और ऐसी राक्षसी, जैसी उसकी दृष्टि होगी वैसी सृष्टि दिखाई पड़ेगी या श्रेष्ठ सृष्टि दिखाई पड़ेगी? शंकरजी जिसे कहते हैं, वास्तव में शिव–शंकर एक है। शिव के जो गण हैं वो देखने में भले भूत–प्रेत दिखाई पड़ते हैं। बंदर–बंदरियों का संप्रदाय दिखाई पड़ता है लेकिन अंदर दिल के साफ होते हैं। जितना सच्चा पोतामेल राम की सेना देती है नम्बरवार, उतना और कोई संप्रदाय इतना सच्चा पोतामेल देनेवाला नहीं हो सकता। तो जो दिल के साफ तो मुराद, दिल साफ तो मुराद हासिल। उनकी हर इच्छाओं की पूर्ति होती है और मैना का दिल काला था, दृष्टि काली थी। तो जैसी दृष्टि उनकी थी वैसी उनको शंकर जी की बारात दिखाई पड़ती थी। आया समझ में?

Baba: Its secret is that all the names that have been mentioned in the scriptures have been given on the basis of the tasks that have been performed. Whatever task whoever performed he was named accordingly. What was the name of the mother? Maina. Shankarji's mother-in-law was named Maina on the basis of the task performed by her. It means that whatever God orders in Murli, she used to give the same reply - *Mai na karungi* (I will not do). What? Whether she is explained nicely or whether she is told directly, she used to give the same reply – I will not do. So, will the one who says 'No' to every request, in God's task, in response to God's directions, will she be the biggest demoness or will she become a devi (female deity)? She happens to be the biggest demoness. And will that demoness see the world in the same way as is her vision or will she see the world in a righteous way? Shankarji for whom it is said that actually Shiv and Shankar are one and the same, although the followers (*gan*) of Shiv may appear to be ghosts and devils, although it appears to be a community of male and female monkeys, they are clean-hearted. The extent to which the army of Ram gives true potamail *numberwise*, no other community can give such a true *potamail*. So, the one who is true in his heart, all his wishes will be fulfilled. All their desires are fulfilled. And Maina's heart was dark, her vision was dark, so as was her vision, so appeared the marriage party of Shankarji to her. Did you understand it?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

45.05–47.00
जिज्ञासु– बाबा दूसरे देशों में, विदेशों में कास्ट नहीं होगी ना? कुल नहीं होगी ना?
बाबा– दूसरे देशों में?
जिज्ञासु– धोबी नहीं होगा, ये बाल काटनेवाला नहीं होगा, ऐसे कुल होते हैं ना इधर भारत में। ऐसे विदेशों में नहीं होते हैं। इधर ही क्यों होते हैं?
बाबा– भारतवर्ष में स्वर्ग में राज्य करनेवाले सात नारायण होते हैं। होते हैं कि नहीं? ऐसे ही, हैं तो सब देवताएँ। उनको देवताएँ कहेंगे या उनमें से किसी को कहेंगे ये नाई है। हजामत बनानेवाला है। ऐसे कहेंगे? नहीं कहेंगे। ये देवता भंगी है। क्या? गंद उठानेवाला, ऐसा कहेंगे? नहीं कहेंगे। तो जैसे सतयुग में सब देवताएँ थे, भले उनका जो दूसरा रूप है जो मर्ज हो चुका था, वो दिखाई नहीं पड़ रहा था। जब द्वापरयुग शुरू होता है फिर उनका उद्भव होता है। उनके अंदर जो कमी है वो बाहर दिखाई पड़ती है। माना उनको पता चलता है, ये पक्के देवता धर्म के नहीं हैं बल्कि हिन्दू हैं। क्या? जो बाद में हिन्दू कहे गये। असली देवता नहीं थे। ऐसे ही जो दूसरे धर्मवाले हैं, उन दूसरे धर्मवालों में ये परम्परा है कि वो एक ही दिखाई पड़ते हैं। लेकिन वास्तव में भी उनमें ऐसी–2 आत्माएँ मिक्स हैं जो जब वहाँ से उठकर के, कनवर्ट होकर के भारतवासी बनती हैं अंतिम जन्म में और उनको भगवान का ज्ञान मिलता है तो उनका असली रूप प्रत्यक्ष हो जाता है।

Time: 45.05-47.00
Student: Baba, there are no castes, no clans in other countries, in foreign countries.
Baba: In other countries?
Student: There are no (separate communities of) washermen, barbers; there are such clans here in India. Such clans do not exist in foreign countries. Why do they exist only here?
Baba: There are seven Narayans who rule in India. Do they rule or not? Similarly, all of them are indeed deities. Will they be called deities or will any one of them be called a barber who shaves. Will it be said so? It will not be said so. This deity is a scavenger (*bhangi*). What? Will they say that this person picks garbage? It will not be said so. So just as in the Golden Age all were deities, it may well be that their other form remained merged. It was not visible. When the Copper Age begins, those forms emerge. Their inner weakness comes out. This means that they come to know that they do not belong firmly to the deity religion but they are Hindus. What? The ones who were later on called Hindus; they were not the true deities. Similarly, there is a tradition among people of other religions that they look alike. But in reality there are such souls mixed in them that when they come out from there, when they convert and become residents of Bharat in the last birth and when they get the God's knowledge, their true form is revealed.

47.10–48.08
जिज्ञासु– भक्तिमार्ग में जो भी ऋषि और मुनि होते हैं वो ज्ञान जल ऐसा, उसके ऊपर ऐसा(चिड़ककर), फिर टच करते हैं।
बाबा– टच करते हैं। हाँ।
जिज्ञासु– तो ऐसे क्यों दिखाते हैं।
बाबा– यह जल कौनसा है? (किसी ने कहा–ज्ञान जल।) वो तो दुनिया में जो ऋषि, मुनि, साधू–सन्यासी होते हैं, स्थूल जल देते हैं और यहाँ कौनसा जल है? यहाँ ज्ञान का जल है। ज्ञान का जल देना, फिर उनको टच करना। क्या? उनकी बुद्धि का परिवर्तन जब तक न हो ज्ञान के द्वारा तब तक वो टच करने के योग्य भी नहीं हैं। हमारे संसर्ग–सम्पर्क में आने योग्य आत्माएँ नहीं हैं। किसी को ज्ञान नहीं दिया। ज्ञान देने से पहले ही उसको संसर्ग–सम्पर्क में ले लिया तो उसका प्रभाव अच्छा होगा या खराब होगा? खराब प्रभाव हो जायेगा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 47.10-48.08
Student: In the path of *bhakti*, the sages and saints sprinkle the water of knowledge on others like this. After that they touch (others).
Baba: Then they touch. Yes.
Student: So, why do they depict like this?
Baba: Which water is it? The sages, saints and monks in the world sprinkle physical water and which water is it here? Here it is the water of knowledge. Giving the water of knowledge and then touching them. What? Until their intellect is transformed through knowledge, they are not worthy of [our] touch . They are not souls worthy of coming in contact with us. If someone is not given knowledge and before giving knowledge if we bring them in our contact, then will it have a good effect or a bad effect? It will have a bad effect.

48.18–49.00
जिज्ञासु– जो टेम्पल्स होते हैं ना देवालय, उसके ऊपर, सामने जो है शिखर ज्यादा बड़ा दिखाते हैं लेकिन जहाँ प्रतिमा दिखाते हैं वो छोटा बनाते हैं, उस घर को। ऐसे क्यों बनाते हैं?
बाबा– ऐसे है कि आत्मा छोटी है और परमधाम जो बड़े ते बड़ा घर है, बड़े ते बड़ा दुनिया का मंदिर है उसकी जो बैठनेवाली आत्मा है वो बहुत छोटी है और उसका जो दिखावा है वो बहुत बड़ा है। जिस घर में रहती है वो घर बड़ा है। कहते हैं कन्या की शादी बड़े घर में करनी चाहिए या छोटे घर में करनी चाहिए? बड़े घर में करनी चाहिए।
Time: 48.18-49.00
Student: In the temples (of Hindus) the *shikhar* (tower at the entrance of the temple) is shown to be very big or tall but the structure/place, the house where the idol is installed is small. Why do they build like this?
Baba: The soul is small and the Supreme Abode, which is the biggest home, the biggest temple of the world…, the soul is very small and its show-off is very big. The home where it lives is big. It is said… should a virgin be given in marriage to a wealthier home or a less wealthy home? She should be married to a wealthy home.

49.05–49.17
जिज्ञासु– ब्राह्मणों का कल्चर क्या होता है बाबा?
बाबा– अरे अभी तक तुम्हें ब्राह्मणों का कल्चर ही नहीं मालूम? ब्राह्मणों का सबसे बड़े ते बड़ा कल्चर है पवित्रता, ब्रह्मचर्य।
Time: 49.05-49.17
Student: What is Brahmins culture Baba?
Baba: Arey, don't you know the Brahmins' culture yet? The highest culture of Brahmins is purity, celibacy.

49.25–50.10
जिज्ञासु– बाबा आके सोमरस पिला के बच्चों को अमर बनाते हैं। तो सोमरस माना क्या है?
बाबा– सोम माने क्या है? सोम माने चंद्रमा और चंद्रमा ज्ञान की भाषा में किसका नाम है? ब्रह्मा का। कोई भी मनुष्य मात्र के द्वारा ज्ञान सुना हुआ होगा, सुनाया हुआ होगा उससे गति सद्गति नहीं होगी। कोई भी अमर नहीं बन सकता। अमर अर्थात् देवता तब ही बनेगा जबकि ब्रह्मा के मुख से निकली हुई वाणी, ब्रह्मा से निकला हुआ सोमरस कोई की बुद्धिरूपी धरणी में प्रवेश कराया जायेगा।
Time: 49.25-50.10
Student: Baba comes and makes the children eternal by giving them the nectar (*somras*) to drink. So, what is meant by *somras*?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: What is meant by *Som*? *Som* means moon and in the language of knowledge whose name is Moon? Brahma's. If the knowledge is heard from or narrated by any human being, it will not bring *gati-sadgati*(salvation-true salvation). Nobody can become eternal. Someone can become eternal, i.e. a deity only when the versions (of Shiv) that emerged from the mouth of Brahma, the *somras* (nectar) that emerged from the mouth of Brahma is made to enter in someone's land-like intellect.

50.25–54.00

जिज्ञासु– जब आत्मा शरीर लेते हैं वो भृकुटी में ही रहते हैं या...

बाबा– ये शरीर है राज्य। ये शरीर क्या है? राज्य है और इस शरीर का राजा है आत्मा। जो राज्य का राजा है वो ऊँचे स्थान पर किला बना के रहता है या कहीं नीचे गुफा में रहता है जाकर? कहाँ रहता है? अरे, ऊँचे स्थान पर ऊँची गद्दी पे किला बना के बैठता है। तो ऐसे ही ये शरीर रूपी राज्य में राज्य करनेवाली जो आत्मा है वो अपने मंत्रियों के बीच में बैठती है और मंत्री भी साधारण मंत्रियों के बीच में नहीं। जो ज्ञानेन्द्रियाँ सबसे ऊँचे से ऊँची हैं, आँखें, आँख है तो जहान है और आँख नहीं तो जैसे जहान नहीं। तो इन दो नेत्रों के बीच में आत्मा बैठती है। इन दो नेत्रों से सारी दुनिया को देखती है। इसलिए आत्मा का स्थान सिर्फ भृकुटी के मध्य में ही है। और स्थान आत्मा के लिए नहीं है। ऐसे नहीं कि पाँव के अंगूठे में आत्मा जाके बैठेगी। हाँ?

Time: 50.25-54.00

Student: When a soul assumes a body, does it live only in the middle of the forehead (*bhrikuti*) or ….?

Baba: This body is a kingdom. What is this body? It is a kingdom and the king of this body is the soul. Does a king of a kingdom live on a high place by building a fort or does he live in a cave below? Where does he live? Arey, he sits at a higher place, on a high throne by building a fort. So, similarly, the soul which rules this body-like kingdom sits in the midst of its ministers and not just in the midst of ordinary ministers. The highest sense organs, the eyes, the world exists for someone if the eyes exist and if the eyes don't exist then it is as if the world does not exist. So, a soul sits in the midst of these two eyes. It sees the entire world through these two eyes. This is why the place of a soul is only in the middle of the forehead. The other places are not for the soul. It is not that the soul will go and sit in the thumb of a leg.

जिज्ञासु– ये शरीर छोड के जाते हैं तब वो कहाँ से जायेगी?

बाबा– आत्मा जो है, जैसे राजा या इस राज्य का प्रधानमंत्री आज की दुनिया का या राष्ट्रपति अपने राष्ट्रपति भवन में बैठा हुआ है और दक्षिण भारत में कोई बड़ा हादसा हो जाता ह, तो उसकी बुद्धि का योग वहाँ पहुँचता है या नहीं पहुँचता है? कहाँ? जहाँ हादसा हो गया। ऐसे ही वो अपनी शक्ति को वहाँ आरोपित करता है कन्ट्रोल करने के लिए। ऐसे ही आत्मा रूपी राजा जो है चाहे शरीर छूटे, चाहे शरीर के किसी अंग में बड़ा हादसा हो जाये लेकिन आत्मा तो अपनी जगह पर रहेगी। लेकिन उसकी स्मृति जो है, स्मृति की पॉवर उस अंग में पहुँचती है। मान लो किसी का पाँव कट गया तो आत्मा की पॉवर फटाक से उस अंग में पहुँचेगी। इसका मतलब ये नहीं है कि आत्मा वहाँ से हट जाती है। आत्मा तो अपने स्थान पर ही रहती है। ऐसे नहीं कि आत्मा पाँव के द्वारा निकल गई या कोई–2 को गैस की बीमारी बहुत हो जाती है। भयंकर गैस हो जाती है और वो भयंकर गैस पेट फट पड़ता है तो लोग समझते हैं पेट में से आत्मा निकल गई। ऐसा नहीं है। आत्मा तो अपने स्थान पर ही रहती है। इस स्थान पर ही सैंकड़ों छिद्र हैं, रंध्र हैं आत्मा निकल सकती है। उसको इधर–उधर हिलने–डुलने की आवश्यकता नहीं।

Student: When it has to leave the body, from where does it leave?

Baba: The soul, for example, a king or the Prime Minister or the President of this state in today's world is sitting in his Rashtrapati Bhavan (President's House) and if a major accident

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

takes place in South India, will the connection of his intellect reach there or not? Where? The place of accident. He focuses his power there in order to control (the situation). Similarly, as regards the king-like soul, whether it leaves its body, whether the major organs of the body suffer an accident, the soul will sit at its very place but its remembrance, its power of remembrance reaches that organ. Suppose someone's leg is cut, the soul's power reaches that organ immediately. It does not mean that the soul shifts from there. The soul remains at its place. It is not that the soul came out from the leg. Or suppose someone suffers from a chronic disease of gas. They develop dangerous gas (in the stomach) and that dangerous gas suddenly explodes from the stomach then people think that the soul came out of the stomach. It is not so. A soul remains at its very place. There are numerous holes at that very place; the soul can come out through them. There is no need for it to move here and there.

54.10–56.17

जिज्ञासु– कोई शरीर छोडा हुआ होगा तो वो सफेद रूप में किसी को दिखाई पड़ता है, ऐसे बोलते हैं। ऐसा सफेद में ही क्यों दिखाई पड़ते हैं?

बाबा– आत्मा के ऊपर आवरण होता है। वो देह का आवरण, स्थूल देह का आवरण होता है पहला। उसके बाद दूसरा आवरण होता है सूक्ष्म शरीर का। तो जो सूक्ष्म शरीर होता है.... जैसे कि पहले टी.वी थी। रंगीन टी.वी नहीं थी। क्या थी? ब्लैक एंड़ व्हाईट ही थी। ऐसे ही जो शरीर का पहला रूप सूक्ष्म ते सूक्ष्म है वो सूक्ष्म शरीर है। सूक्ष्म शरीरवाली आत्मा सिर्फ ब्लैक एंड़ व्हाईट रूप में ही दिखाई पड़ेगी। लेकिन जब वो अति गहरी हो जाती है आत्मा। अपने गहरी स्वरूप को पकड़ लेती है माने ज्ञानी तु आत्मा बन जाती है। तो ज्ञानी तु आत्मा अपने 84 जन्मों को भी देख सकती है, रंग–बिरंगे अपने जीवन चरित्रों को भी देख सकती है। इसलिए वो आखरी में अंत में जाकर के काले और लाल भी दिखाई पड़ेंगे। लाल रंग होता है क्रोधियों का, काला रंग होता महाकामियों का। अभी तो काम विकार के दृश्य फिर भी ऐसे नहीं दिखाई पड़ते जैसे बंदर दिखाई पड़ते हैं। आगे चल के दुनिया की हालत कैसी हो जायेगी? जैसे बंदरों की दुनिया होती है। ट्रेन में सामने–2 गंद करते हुए देखते रहेंगे सैंकड़ों लोग और कोई हटाने, बचानेवाला नहीं रहेगा। किसी को शर्म नहीं आयेगी। बंदरों की दुनिया ऐसी आजकल है या नहीं है? ऐसी ही है।

Time: 54.10-56.17

Student: People see someone who has left his body in a white form. People say like this. Why are they visible only in a white form?

Baba: A soul is covered by a layer. The first layer is the the body, the physical body. After that the second layer is that of the subtle body. So, the subtle body is.... like earlier there was T.V. There was no colour T.V. What was there? It was only black and white. Similarly, the first most subtle form of the body is the subtle body. A soul with a subtle body will be visible only in a black and white form. But when the soul becomes very deep, when it catches its deep form, i.e. when it becomes a knowledgeable soul, then a knowledgeable soul can see its 84 births too. It can see the colourful incidents of its life. This is why in the end they (i.e. ghosts) will be seen in black and red colours also. Red colour indicates wrathful people. Black colour indicates the most lustful ones. Now the scenes of lust are not visible like those of monkeys. In future what will the condition of the world become like? Like the world of monkeys. Numerous people will see people indulging in dirty acts in front of them in a train and there will not be anyone to remove them from there or save them. Nobody will feel ashamed. Is the world of monkeys not like this nowadays? It is certainly like this .

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

56.26–58.00
जिज्ञासु– साधु, सन्यासी जो है, मुनि है, शास्त्रों में उनको दाढ़ी और मूंछ दिखाते है। ऐसा क्यों दिखाते हैं?
बाबा– जो साधु–सन्यासी होते हैं वो एक प्रकार के साधु–सन्यासी होते हैं या अनेक प्रकार के साधु–सन्यासी होते हैं? अनेक प्रकार के साधु–सन्यासी है। उनमें एक प्रकार के ऐसे हैं जो अपनी विकारी प्रवृत्तियों को छुपाते नहीं हैं। संसार को दिखाते हैं कि देखो हम देवता नहीं हैं। क्या? हम देवता नहीं हैं। हम क्या हैं? हम दाढ़ी–मूँछवाले विकारी हैं। वो अपनी दाढ़ी को छुपाते नहीं हैं। आज की दुनिया में मनुष्य क्या करते हैं? जो वेल एजुकेटड़ हैं वो क्या करते हैं? वो अपनी मूँछ भी मुड़ा देते हैं। थोड़ी भी दिखाई ना पड़े विकार की निशानी। क्लीन शेव। तीसरे मनुष्य ऐसे भी हैं जिनको देवता कहा जाता है। वो ऐसे हैं जिनको वास्तव में दाढ़ी–मूँछ है ही नहीं। विकारों की न अंदर से कोई बीमारी है और न कोई बाहर से बीमारी है। तो साधु, संत, महात्मायें भी अनेक प्रकार के हैं।
Time: 56.26-58.00
Student: The holy men and saints are shown to have beard and moustache in the scriptures. Why is it depicted so?
Baba: Are the sages and saints of one kind or of different kinds? There are different kinds of sages and saints. One kind among them is those who do not hide their vicious tendencies. They show to the world, look, we are not deities. What? We are not deities. What are we? We are vicious people with beard and moustache. They do not hide their beard. What do people in today's world do? What do the well-educated ones do? They shave off their moustache also. Not even a trace of the vices should be visible. Clean shave. Third kind of people is those who are called deities. They are such ones who actually do not have beard or moustache at all. They don't suffer from the disease of vices either from inside or outside. So, the sages, saints, monks themselves are of different kinds.

58.05–59.38
जिज्ञासु– बाबा सर्विस के समय एक भाई ने पूछा, जैसा 36 में बाबा आये थे उसको 33 साल एड किया तो 69 हुआ। तो 69 में ब्रह्मा तो गुम हो गया बच्चों के सामने, शरीर भी छोड़ के चले गये। ...
बाबा– 69 में ब्रह्मा की जो कार्य की शैली थी साकार तन में कार्य करने की वो समाप्त हुई।
जिज्ञासु– 76 में एड़वान्स में बाबा तो प्रत्यक्ष हो गये उसमें 33 साल एड़ किया तो 2009 आया।
बाबा– 33 साल 76 में क्यों एड़ किया?
जिज्ञासु– माना 33 साल–2 ऐसा है ना।
Time: 58.05-59.38
Student: Baba, a brother had asked at the time of service that Baba came in 1936 and if we add 33 years to it, it comes to 69. So, Brahma vanished from the eyes of the children in 1969. He left his body….
Baba: Brahma's style of working through the corporeal body ended in1969.
Student: Baba was revealed in 1976 in the advance party and if we add 33 years to it, it comes to 2009.
Baba: Why did you add 33 years to 76?
Student: I mean to say that it is a period of 33 years each, isn't it?

बाबा– वो 33 साल तो 1936 में था लेकिन बाबा में ब्रह्माबाबा में तो परमात्मा ने प्रत्यक्षता की जो निशानियाँ हैं वो तो सन् 47 में प्रत्यक्ष हुईं। सन् 36 में तो कोई निशानी नहीं थी कि भगवान आया हुआ है। ऐसे ही 69 में भगवान बाप के, बाप के रूप में आने की, टीचर के रूप में आने की कोई निशानी नहीं थी लेकिन आ तो गया था। आ तो गया था लेकिन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

प्रत्यक्षता कितने साल के बाद हुई? 7–8 साल के बाद हुई। ऐसे ही जैसे वहाँ सन् 68 में गया और 77 में सम्पूर्णता की, सम्पूर्णता वर्ष की प्रत्यक्षता हुई। ऐसे ही आदि में हुआ, ऐसे ही मध्य में हुआ। ऐसे ही फिर आगे लगाओ।

Baba: That 33 years period was in 1936 but the indications of revelation of the Supreme Soul through Brahma Baba were seen only in 1947. There was no indication at all in 1936 that God has come. Similarly, there was no indication of God the Father coming in the form of a Father, in the form of a Teacher in 1969, but He did come. He did come, but after how many years did the revelation take place? It took place after 7-8 years. Similarly, just as he departed there in 1968 and revelation of the stage of perfection, of the year of perfection took place in 1977. It happened like this in the beginning, in the middle. Similarly you can apply it in future [too].

59.45–1.00–45

जिज्ञासु– जो सीढ़ी का चित्र है ना उसको, उसका ज्ञान को ऐसा ही मनन चिंतन करने से वो क्या सुदर्शन चक्र घुमाना होगी?

बाबा– सीढ़ी का चित्र का जो है जिसका मनन–चिंतन–मंथन ज्यादा चलेगा वो पक्का भारतवासी सिद्ध होगा। क्योंकि भारतवासियों को ही सीढ़ी का चित्र बहुत अच्छा लगता है। 84 का चक्र कौनसे चित्र में है? सीढ़ी के चित्र में है और आदि से लेकर के अंत तक भारतवासियों की कथा–कहानी है। भारत के 84 जन्मों का उत्थान और पतन की कहानी है। तो जिसका मनन– चिंतन–मंथन सीढ़ी के चित्र में जास्ती चलता है तो भारतवासी हैं। अच्छी बात है ना।

Time: 59.45-1.00.45

Student: Does thinking about the picture of the Ladder and its knowledge mean rotating the swadarshan cakra?

Baba: As regards the picture of the Ladder, those who think and churn more about it will be proved to be firm Bharatvasis because only Bharatvasis like the picture of the Ladder more. Which picture contains the cycle of 84 (births)? It is in the picture of the Ladder and it contains the story of Bharatvasis from the beginning to the end. It has the story of the rise and fall of Bharat in 84 births. So, those who think and churn more about the picture of the Ladder are Bharatvasis. It is a good thing, isn't it?

1.00.55–1.02.40

जिज्ञासु– शरीर छोड़ने के बाद आत्मा को कितने दिन के बाद शरीर मिलेगी?

बाबा– तुरंत। आत्मा शरीर छोड़ती है एक और दूसरा शरीर लेने में उसको 1 सेकेंड भी नहीं लगता।

जिज्ञासु– भक्तिमार्ग में जो कर्मकांड दिखाते हैं ना वो किसलिए करते है?

बाबा– वो कर्मकांड सिर्फ हिन्दुओं में ही करते है या दूसरे धर्मवाले भी वो कर्मकांड करते है?

जिज्ञासु– हिन्दू।

Time: 1.00.55-1.02.40

Student: After how many days does a soul get a (new) body after leaving its (old) body?

Baba: Immediately. A soul leaves one body and it does not take even a second to take another body.

Student: Why are the rituals that they show in the path of bhakti performed?

Baba: Are these rituals performed only among Hindus or do the people of other religions also perform those rituals?

Student: Only the Hindus perform it.

बाबा– तो हिन्दूवालों की ही सदगति होती है तो दूसरे धर्मवालों की सदगति नहीं होती या हिन्दुओं की भी दुर्गति होती है और दूसरे धर्मवालों की भी दुर्गति होती है? हिन्दुओं की भी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दुर्गति होती है जो कर्मकांड करते हैं और जो दूसरे धर्मवाले हैं उनकी भी दुर्गति होती है। तो कर्मकांड किया–2 न किया बराबर। और ही वेस्टेज ऑफ टाईम, मनी और एनर्जी होता रहता है। फायदा कुछ भी नहीं।

Baba: So, do only the Hindus achieve true salvation; do people of other religions not achieve true salvation or do the Hindus as well as the people of other religions undergo degradation? Hindus, who perform rituals, also undergo degradation and the people of the other religions also undergo degradation. So, whether they perform rituals or not, it is one and the same. Moreover wastage of time, money and energy keeps taking place to a greater extent. There is no use at all.

जिज्ञासु– शूटिंग कैसी होगी बाबा?
बाबा– यहाँ?
जिज्ञासु– हाँ, जी।
बाबा– यहाँ भारतवासियों को मरने में हृदय विदीर्ण होता है। बोला तो मुरली में भारतवासियों को सरेण्ड़र होने में हृदय विदीर्ण होता है। कागज पर लिखकर के रख दे उनके माँ–बाप तो भी कागज का कागज में धरा रह जाता है लेकिन सरेण्ड़र दिल से नहीं होते। हृदय विदीर्ण होता रहता है हाय– 5। 63 जन्मों के हमारे मित्र–सम्बन्धी कहाँ चले गये?

Student: How will its shooting take place Baba?
Baba: Here?
Student: Yes.
Baba: Here, Bharatvasis experience a lot of pain in dying. It has been said in the Murlis that the Bharatvasis feel a lot of pain in the heart in surrendering. Even if their parents give it writing on a paper, it remains only on paper and they do not surrender from their heart. And their heart feels sorrowful (in surrendering). Oh! Where did our friends and relatives of 63 births go?

1.02.50–1.03.55
जिज्ञासु– बाबा आके बता देते हैं जो 63 जन्मों का जो भी हैं, 63 जन्मों का पाप जो भी हैं वह हिसाब–किताब जो हैं वो इधर चुक्तु करना है ना।
बाबा– हाँ, जी।
जिज्ञासु– एक जन्म के बाद उसका जो भी हिसाब–किताब हैं दूसरे जन्म में खत्म नहीं होगी क्या?
बाबा– कोई कर्म ऐसे होते हैं जो बड़ी तीव्र इच्छा शक्ति से किये जाते हैं उनका फल जल्दी मिल जाता है और कोई कर्म ऐसे हैं तीव्र इच्छा से नहीं किये जाते धीरे–2 धीमी इच्छा शक्ति है उनका फल दो, चार, आठ, पंद्रह, बीस, पच्चीस जन्म बाद भी मिल सकता है।

Time: 1.02.50-1.03.55
Student: Baba comes and tells us that we have to settle the sins committed in 63 births, the karmic accounts of 63 births here.
Baba: Yes.
Student: Will the karmic account of one birth not be settled in the next birth?
Baba: There are some actions which are performed with a great will power, the fruits of those actions are received soon and there are some actions which are not performed with strong will power, there is less will power used in those actions then the fruits for those actions can be received even after two, four, eight, fifteen, twenty, twenty five births.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info